Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

खादी और चरखा आर्थिक पहिए

कमलेश कुमार नाथ*

* एम.ए., नेट (जेआरफ) (इतिहास) हरणी महादेव रोड नया समेलिया, भीलवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – गांधी जी 1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। गांधी जी के चिंतन में स्वदेशी की अवधारणा का व्यवहारिक स्वरूप खादी एवं कुटीर उद्योग के रूप में सामने आता है। स्वदेशी को गांधी ने चरखा एंव खादी के सन्दर्भ में विश्लेषित किया है। स्वदेशी का अर्थ है अपने देश से सम्बन्धित राजनीतिक धरातल पर राष्ट्रवाद। स्वदेशी के सम्बन्ध में गांधी जी व्यक्ति के जीवन को धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक धरातल पर बांधते हैं। स्वदेशी का सिद्धांत अत्यधिक राजनीतिक महत्व का है। भारत के स्वतंत्रता के आंदोलन में चरखे का आर्थिक पहिए के रूप में महत्व देखा जा सकता है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में चरखा प्रचलन में था। चरखा एक हस्तचालित यंत्र है जिससे सूत काता जाता है भारत में चरखे का सर्वप्रथम उल्लेख हमें मध्यकालीन इतिहासकार इसामी की कृति फुतुहू उस सलातिन में मिलता है। अमीर खुसरो ने भी इसका उल्लेख किया था। भारत में 1500 ई. तक खादी ओर हस्तकला उद्योग पूरी तरह विकसित था। मसलन 1702 ई. में अकेले इंग्लैंड ने भारत से 10,53,725 पाउंड की खादी खरीदी थी। मार्कोपोलो, ट्रेवेनियर ने भी खादी का उल्लेख किया था। भारत में मुख्यत दो प्रकार के चरखे प्रचलन में आए प्रथम खड़ा चरखा दूसरा अम्बर चरखा।

18 अप्रैल 1921 को गांधी ने वर्धा में सत्याग्रही आश्रम की स्थापना की थी। इस समय गांधी जी ने कांग्रेस में करोड़ों सदस्यों की भर्ती की ओर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया था। गांधी पर असहयोग आंदोलन के बाद राजद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें 6 वर्ष की सजा सुनाई गई थी, किन्तु स्वास्थय खराब होने की वजह से उन्हें 2 वर्ष में ही रिहा कर दिया गया।

जब गांधी जी जेल से मुक्त होकर आए तो उन्होंने महसूस किया कि असहयोग आंदोलन पुन प्रारम्भ करना असम्भव है। इसलिए उन्होंने अपने जीवन का कुछ समय त्ररी सूत्री कार्यक्रम खादी, हिन्दू मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता उन्मूलन लागू करने में व्यतीत किया।

'गांधी जी का मानना था कि सारे कार्यक्रम की कुंजी चरखा चलाना है। चरखे के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति की जा सकती है। दिसम्बर 1924 में कांग्रेस का बेलगाव में अधिवेशन हुआ था। इस अधिव की अध्यक्षता खुद गांधी ने कि थी। यही से उन्होंने खादी का श्री गणेश किया। उन्होंने कहा खदर का अभियान छेड़ा जाय। कांग्रेस के कार्यकर्ता को खदर का सिद्धांत मनवाने के लिए उन्होंने कांग्रेस को इस बात के लिए लिखा था कि चार आने का शुल्क देकर सदस्यता प्राप्त करने के बजाय वही सदस्य मताधिकार के प्रयोग का अधिकारी माना जाय जो 2000 गज प्रतिमास सूत काते।'[1]

इस अधिवेशन में गांधी जी ने लोगो से अपील कि 'आप लोग जिले के हर भाग में जाए और खदर हिन्दू मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता उन्मूलन का संदेश घर घर तक पहुंचाए देश के नवयुवकों को अपना अनुयायी बनाओ और उन्हें स्वराज के असली सैनिक के रूप में ढालो।'

गांधी जी भारतीय जनता का ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर खींचना चाहते थे। अत: उन्होने 22 सितम्बर 1925 को पटना में चरखा संघ की स्थापना की। इसके बाद गांधी ने बंगाल, यूपी, बिहार, गुजरात, मद्रास इत्यादि स्थानों की यात्रा की ओर चरखे का प्रचार प्रसार किया। गांधी जी बंगाल से बड़े प्रभावित थे उन्होंने कहा बंगाल में बहुत ऐसे क्षेत्र है जहां विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। सूत कतने की बंगाल की प्रतिभा को बड़ा सराहा और सारे भारत से सोदपुर खादी प्रतिष्ठान का अनुकरण करने को कहा।

सूत कात ने कि बंगाल की प्रतिभा को उन्होंने बड़ा सराहा और सारे भारत से सोदपुर खादी प्रतिष्ठान का अनुकरण करने को कहा ।

प्रख्यात इतिहासकार ताराचंद लिखते है कि 1925 ई. के अंत में गांधी जी भारतीय राजनीति से अलग हो गए थे। 1926 ई. में वर्ष भर आश्रम में ही रहे ओर खदर सम्बन्धी संगठनात्मक कार्य करते रहे। 6 अप्रैल से आरम्भ होने वाले राष्ट्रीय सप्ताह में उन्होंने खदर अभियान को उन्होंने तेज कर दिया। यह सप्ताह जालियांवाला बाग हत्याकांड की स्मृति में मनाया गया था। गांधी ने कहा ऐसा क्या काम है जिसे सभी व्यक्ति अनायास कर सकते है। जिससे देश की सम्पदा बढ़ सकती है, संगठन की शक्ति में वृद्धि होती है। वह कोनसा काम है जिससे हम सब एक दूसरे के बराबर समझ सकते है बिना हिचक के इसका उत्तार है चरखा।[2]

गांधी जी का यह अभियान काफी सफल रहा था। मसलन स्वराज्य पार्टी के नेता मोती लाल नेहरू ने इलाहाबाद में सड़कों पर खादी खदर बेची थी स्कूल के बच्चो ने भी इसमें हिस्सा लिया था। छात्रों से कहा गया 'गावो ओर हमें प्रेमसुत्र में बाधने वाला एकमात्र साधन चरखा है।'

गांधी के खादी अभियान में दो ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इस अभियान में महत्वूर्ण भूमिका निभाई, प्रथम विटलदास जेराजनी दूसरे कन्हैया लाल थे। 'कन्हैया लाल एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने महात्मा गांधी की स्वाधीनता, स्वराजय ओर स्वदेशी की भावना से समग्र अनुप्रमाणित हो ब्रिटिश सम्राज्य के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलन में सक्रिय रूप से भागदारी निभाई। वे अपने कंधो पर खादी के थान लादे गाव गांव घूमते खादी पहनने का प्रचार प्रसार करते थे। जब गांधी ने उन्हें देखा तो खादिवाला के नाम से संबोधित

किया। तब से कन्हैया लाल खादीवाला के नाम से जाने गए ये ही नाम उनकी गोत्र ओर पहचान बन गया,'[3] जेराजानी गांधी के विचारो से काफी प्रभावित थे। उन्होंने अपने हजारों रुपयों के विदेशी व्यापार को तिलांजलि देकर खादी के प्रचार प्रसार में लग गए ओर जीवनपर्यत तक करते रहे।

गांधी जी ओद्योगिक रण के कटर विरोधी थे। उनका विचार था की बड़े पैमाने पर उत्पादन से सामाजिक एवं आर्थिक दोष उत्पन होते हैं। मशीनों के उपयोग से मनुष्य आलसी हो जाता है और उसको अपने परिश्रम में कोई रुचि नहीं रहती। वह एक ऐसी अर्थव्यवस्था चाहते थे जिसमे मजदूर खुद स्वामी हो। ऐसी अर्थव्यवस्था में मजदूरों के शोषण का कोई अवसर ही नहीं है। गांधी मशीनों के विरोधी नहीं थे, वे कहते थे कि 'मनुष्य का शरीर पर चरखा भी मशीन है, किन्तु वे उस मशीन के विरोधी थे जिसके उपयोग से शरम को बचाने की चेष्टा की जाती हैं। मनुष्य परिश्रम को बचाते चले जाते जिसका परिणाम यह होता है कि लाखो व्यक्ति सड़क पर घूमते फिरते ओर भुखमरी बढ़ जाती। उन्होंने कहा मैं समय और श्रम की बचत करना चाहता हूं, किन्तु मानव जाती के कुछ भाग के लिए नहीं सभी के लिए।' [4] आज मशीन केवल थोड़े से व्यक्तियों को करोड़ों की पीठ पर चढ़ने में सहायता करती है है। इसलिए गांधी जी ने खादी का समर्थन किया।

'ग्रामीण सर्वोदय गांधी जी का महान आदर्श था। गांधी जी की इच्छा थी कि पुरातन काल के ग्रामीण समुदायों की फिर से स्थापना की जाए। उनमें समृद्धशाली कृषि, विकसित उद्योग और छोटे छोटे पैमाने के सहकारी संगठन स्थापित किए जाए। जिस प्रकार प्राचीनकाल में भारत के लोग भारत में उत्पादित वस्तु का प्रयोग करते, वस्तु विनिमय के द्धारा व्यापार होता था। गावों में विभिन्न प्रकार के वर्ग के लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते थे।'[5] मसलन लोहार लोहे का, चर्मकार चर्मे का, कुंभकार मिट्टी के बर्तन बनाने का आदि। इससे समस्त गांवों के लोग एक दूसरे पर निर्भर थे और एक दूसरे के सहयोग से काम चलाते थे। इस प्रकार गांधी जी खादी के माध्यम से भारत की पुरातन व्यवस्था को पुन जीवित करना चाहते थ। अत गांधी जी का भारत गावों में था न कि शहरों में।

गांधी जी चरखा के माध्यम से न केवल देश के लोगो को स्वावलंबन की शिक्षा दे रहे थे बल्कि खादी के माध्यम से वे देश में एकता स्थापित कर रहे थे। इनका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ साथ भारतीयों में राजनीतिक चेतना जगाना भी था। खादी अभियान के माध्यम से देश के सभी वर्ग हिन्दू मुसलमान, शूद्र आदि को साथ लेकर देश को स्वतंत्र कराने का प्रयास कर रहे थे। गांधी जी ने यंग इंडिया में लिखा 'खदर द्धारा निर्धन लोग गरीबी की जंजीरों से मुक्ति पाते है और विभिन्न खदर वर्गों ओर लोगो के बीच नैतिक ओर आध्यात्मिक एकता स्थापित होती। खदर में बड़ी जबरदस्त संगठन शक्ति है क्योंकि खदर अपनाने के लिए संगठन करना पड़ता है और पूरा भारत इसका कार्यक्षेत्र है। इसलिए में धन के न्यायोचित वितरण के लिए कार्य करता हूं। यह कार्य में खदर द्धारा करना चाहता हू। यह कार्य ब्रिटिश शोषण के केंद्र को ही शुद्ध करता है। इसलिए इससे ब्रिटेन का पवित्रीकरण करना होगा इस प्रकार खादी स्वराज्य का मार्ग है।'[6]

खादी अभियान से महिलाएं काफी प्रभावित थी। खादी कार्य के विकास और प्रचार में महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया था। 'गांधी सेवा सेना, भगिनी समाज, भाटिया स्त्री मंडल आदि महिला संस्थाओं ने अभियान का मार्ग प्रशस्त किया। सरोजिनी नायडू महिलाओं में अग्रणी नेता थी। इन संस्थाओं की महिलाएं घर घर में जाकर खादी का प्रचार करती थी। अनेक प्रदर्शनियों में उच्च कुटुंब की महिलाओं ने खादी विक्रेता के स्थान पर अपनी सेवाए प्रदान की थी।' [7] अब महिलाएं अपने दैनिक जीवन का कार्य करने के बाद अपना अधिकांश समय सूत कात्तने में व्यतीत करने लगी। इससे महिलाओं को रोजगार मिला ओर समाज में कुछ हद तक सम्मान मिलने लगा। महिलाओं के कार्य करने से पुरुषों पर परिवार का आर्थिक भार कम हुआ। इस प्रकार महिलाओं की स्थिति में सुधार आया।

समाज में निम्न वर्ग की दशा बड़ी दयनीय थी। उन्हें घरना की दृष्टि से देखा जाता था। उनका मुख्य कार्य साफ सफाई का था। गांधी के खदर अभियान के माध्यम से उनकी हालत दशा में सुधार करने का प्रयास किया और समाज के अन्य वर्गों के समान उन्हें भी इस आंदोलन में शामिल किया। हरिजनों के इस आंदोलन में शामिल होने के बाद उनकी दशा में जो सुधार आया उसके बारे में गांधी 1933 में मद्रास प्रदर्शनी में कहा'एक स्वदेशी क्या हो सकता है, हरिजनों के लिए प्रदर्शनी करते हैं, आप पूछ सकते है कि मुझे लगता है कि खादी को इसके साथ बहुत कुछ मिला है, क्योंकि हाथ से कताई ओर कपड़े की बुनाई आपको जानकर आश्चर्य होगा, आराम और प्रकाश की किरण लाया है। हजारों ओर हजारों हरिजनों के अंधेरे घरो में। मुझे इस छोटे से दौर के दौरान भी कई जगहों पर जाने का मौका मिला ओर हरिजनों के लिए खादी की शक्ति की खोज की। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बहुत सी चीजें हैं, मुझे उम्मीद है कि उन चीजों का प्रदर्शन था किया गया है। हरिजनों ने काम किया अधिंकाश भाग के लिए।'[8]

गांधी के खादी अभियान का प्रभाव मजदूरों, किसानों, शूद्रों, आदि के साथ साथ छात्रों पर भी पड़ा। हजारों संख्या में छात्रों ने खादी अभियान में गांधी का समर्थन किया। गांधी जी ने अक्टूबर 1927 में छात्रों को कालीकट में संबोधित करते हुए कहा 'मैं निश्चितता के साथ कह सकता हूं, अगर आप इस प्रयास में गौरव लाना चाहते है, कुछ रचनात्मक कार्य करो। ऐसा करने से आप अन्य छात्रों के लिए उदाहरण बनेंगे। खादी पहली चीज है जिसके बारे में बात करेंगे आप इसे पहनकर ओर बेचकर ज्यादा सेवा प्रदान कर सकते है। जब तक समझोता नहीं हो जाता तब तक आप इस काम को कर सकते है और आगे बढ़ना चाहते है तो इसे यहां लाए और इसका अलाव जलाय। विदेशी कपडे आपके लिए बहुत अधिक ऋण लेकर आयेगे। आप उस खदर के बारे में एक लेख देखेंगे जिसे हम विदेशी कपड़े का उपयोग करके भारत में ला रहे थे। आपके पास कम से कम कुछ बचा होना चाहिए। जब आप यह काम करेगे तो सरकार को भी यकीन हो जाएगा कि अब छात्रों ने काम करना शुरू कर दिया है।'[9]

इस प्रकार समाज के सभी वर्गों ने गांधी के खादी अभियान को सफल बनाने का प्रयास किया। गांधी के खदर अभियान से भूमिहीन कृषकों, शूद्रों, श्रमिकों, महिलाओं को रोजगार मिला। इनके अतिरक्त समाज के कुछ ऐसे व्यक्ति जो शारीरिक रूप से किसी भी प्रकार का कार्य करने में सक्षम नहीं थे खादी उनके भी जीवन का आधार बनी। मसलन खादी अभियान में गांधी के सहयोगी रहे जेराजानि लिखते है' जब वे तमिलनाडु के एक छोटे से कस्बे तिरुपुर में गए तो उन्होंने वहां एक बूढ़ी औरत को सूत कातते देखा। इसी क्षेत्र में एक अंधा व्यक्ति खादी व्यापारियों का प्रमुख था। इसी संदर्भ में जेराजनि एक ओर घटना का उल्लेख करते हैं की जब वे मद्रास अधिवेशन के अवसर पर मदन मोहन मालवीय के साथ गए तो उन्होंने खादी प्रदर्शन में एक अंधी ओरत को सुत कातते देखा। जब उन्होंने ने चरखे की माल के दी तो उस औरत ने चरखे पर हाथ फिरा कर टूटी माल निकाल दी और फिर से सूत

कातने लगी।' [10] इस प्रकार चरखा न जाने कितने बूढों, अपहिजो, ओर निराधारो का सहारा बना। ये लोग सूत कातते थे और उससे जो आय प्राप्त होती उससे अपना जीवन निर्वाह करते।

गांधी जी ने खादी अभियान के माध्यम से देश को एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया था, किन्तु इसमें उन्हें पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिली। मसलन कुछ ही क्षेत्रों के मुस्लिमो ने इसमें हिस्सा लिया था। गांधी ने यंग इंडिया में लिखा था 'मैं बहुत से मुस्लिम सगठनों को विशेष रूप से खादी के लिए समर्पित नहीं जानता हूं। न ही बहुत से मुस्लिम इस ब हुआवशक राष्ट्रीय कार्य में जीवंत रुचि लेते पाए जाते है। वास्तव मैं बकरा ईद के दौरान मित्र मुझसे कहता है मुसलमानों को एक हाथ कि उंगलियों पर गिना का सकता है, जो खादी के कपड़े पहने हुए थे। वे भारतीय कपड़े भी पहने नहीं हुए थे। मुझे आशा है की यह समिति इस हालात को बदलेगी' [11]

कई लोगों का मानना था कि खादी बहुत महंगी होती है, विदेशी कपड़े के मुकाबले में। इसलिए सभी के लिए खादी पहना संभव नहीं था। गांधी ने कहा कि मिल में को कपड़ा तेयार होता है वो भारी मशीनों से बनाया जाता हैं, जबकि खादी चरखे से काते गए सूत से। अत: दोनों में कोई मुकाबला नहीं हो सकता, मुकाबला तो बराबर वालो में होता है। इसलिए गांधी जी ने स्वयं ने सीमित मात्रा में। वस्त्र धारण करना प्रारंभ कर दिया। वे कंधे पर एक साल रखते थे और धोती पहनते थे। इस प्रकार उन्होंने लोगों को आवश्यकतानुसार वस्त्र पहने का संदेश दिया।

गांधी का खादी का अर्थशास्त्र अहिंसा का अर्थशास्त्र था। गांधी ने खादी में सामाजिक स्वदेशी धर्म को देखा था। गांधी जी की दृष्टी में स्वदेशी का अर्थ है हम किसी के सामने हाथ न फैलाएं, अपने ही संसाधनों का अपनी ही बनाई हुई चीजों का अधिक से अधिक प्रयोग करें। गांधी जी का भारत गावों में बसता था । उनका विचार था कि हमें गावों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। हमें उनकी मूढ़ता अंधविश्वास और संकुचित दृष्टि को दूर करना है। वे गावों को स्वावलबी बनाना चाहते थे।

'गांधी की ग्राम स्वराज्य की कल्पना यह थी कि ऐसा पूर्ण गणतंत्र हो जो अपनी मुख्य जरूरतों के लिए पड़ोसियों पर निर्भर न हो ओर फिर भी बहुतेरी जरूरतों के लिए एक दूसरे पर निर्भर हो, जिनमें दूसरों पर निर्भरता जरूरी है। इस तरह हर गांव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरतों का तमाम अनाज ओर कपड़ा खुद पैदा करे। '[12] इसलिए उन्होंने शारीरिक श्रम और चरखा चलाने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा जब तक हम हाथ से सूत नहीं कात्तोगे तब तक हमारी पराधीनता ऐसे ही बनी रहेगी। इस प्रकार उन्होंने धन का एक ऐसा स्त्रोत खोज निकाला जो सम्पूर्ण संसार में अदभुत है।

इस प्रकार गांधी जी ने खादी के वस्त्र पहनकर एक सिपाही के रूप में अपने देश कोस्वावलंबी बनाया ओर स्वराज की प्राप्ति की। स्वदेशी धर्म के अन्तर्गत अपने देश का धर्म, भाषा, राजनीतिक पद्धतियां आदि को अंगीकार करना आवश्यक माना जाता है, परंतु स्वदेशी की धारणा बहिष्कार वाली धारणा नहीं है तथा इसमें घर्णा का कोई भाव नहीं है। स्वदेशी व्रत के अन्तर्गत सभी वस्तुओं का त्याग न करके उन्ही विदेशी वस्तुओं का त्याग किया जाय जिसका उत्पादन अपने देश में होता है तथा जिनके उपयोग के बिना हमारे समाज के कुछ अंग अपनी जीविका खो देते हैं। गांधी के स्वदेशी व्रत, संकीर्णता, स्वार्थ आदि दोषों से मुक्त था। यह अहिंसा और प्रेम का पर्याय है। जब अधिकांश भारतीय अपने दैनिक जीवन में विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने लग गए तब गांधी ने स्वदेशी पर बल दिया विदेशी वस्तुओं का त्याग किया। गांधी ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया क्योंकि वे ही हमारी वस्त्र बनाने की कारीगरी और क्षमता को नस्ट कर रहा था।,कार्ल मार्क्स ने 1853 में लिखा था 'यह अंग्रेजी घुसपैठिया था जिसने भारतीय खादी को तोड़ दिया ओर चरखे का नाश कर दिया। अंग्रेजों ने भारतीय सुती कपड़ों को अंग्रेजी मंडियों से वंचित करना आरम्भ कर दिया और फिर भारत में एक ऐसा मोड़ दिया कि सूती कपड़े की मात्रभूमि ही सूती कपड़ों से भर दी गई। सूती कपड़ा उद्योग के नाश होने से कृषि पर बोझ बढ़ गया। और अंत में देश अंकिचन हो गया।' इसलिए गांधी ने चरखा के माध्यम से देश की कारीगरी को दिखाया ओर सभी को स्वावलंबी बनाने का प्रयास किया। इस प्रकार उन्होंने चरखा को स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण हथियार बनाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खण्ड 4, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ.संख्या, 7
2. पूर्व उद्धत वही, पृ.संख्या 8
3. वही पृ.संख्या, 9
4. स्वर सरिता पत्रिका, पृ. संख्या 13
5. रवीश, सुधांशु, गांधी चिंतन, आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स पृ.संख्या, 141
6. वही पृ. संख्या, 142
7. जेरजानी विट्टल दास, खादी की कहानी, खादी ग्राम उद्योग आयोग, पृ.संख्या, 105
8. जोशी दिव्या, गांधी ऑन खादी, नवजीवन प्रकाशन हाउस अहमदाबाद 1955 पृ.संख्या, 43
9. वही, पृ.संख्या, 55
10. पूर्व उल्लेखित पृ.संख्या, 51
11. पूर्व उल्लेखित, पृ. संख्या, 45
12. मोहनराव, यू, एस, महात्मा गांधी का संदेश, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ. संख्या, 89

****